**ओ३म्**

**गुरुकुल पौंधा देहरादून में त्रिपुरा में राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में पांच विद्यार्थियों की सफलता पर आयोजित विजय उत्सव सम्पन्न**

गुरुकुल पौंधा देहरादून ने आज 7 जनवरी 2017 को अपने पांच विद्यार्थियों की त्रिपुरा की राजधानी अगरतला में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की संस्कृत प्रतियोगिताओं में सफलता से सन्तुष्ट होने व अन्य विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देने के लिए स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के पावन सान्निध्य में विजय उत्सव का आयोजन किया। आयोजन में सभी ब्रह्मचारी यज्ञ में सम्मिलित हुए जिसके पश्चात यज्ञ प्रार्थना, भजन एवं कुछ विद्वानों के प्रवचन वा उपदेश आदि हुए। पश्चात सामूहिक प्रीति भोज हुआ।

विजयोत्सव का आरम्भ यज्ञ से हुआ जिसमें गुरुकुल के सभी ब्रहमचारी एवं आगन्तुक अतिथिगण उपस्थित रहे। आज वर्षा होने व निकटवर्ती मसूरी एवं शिमला में भारी हिमपात होने से शिशिर ऋतु अपनी चरम सीमा पर थी। यज्ञ श्रद्धापूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। यज्ञ के पश्चात् समधुर वाणी में भजन गाने वाले ब्रह्मचारी सुखदेव जी ने यज्ञ प्रार्थना हारमोनियम व तबले पर संगति दे रहे एक अन्य ब्रह्मचारी के सहयोग से गाई जिससे वातावरण में भक्तिरस व श्रद्धा का संचार हुआ।

यज्ञ के पश्चात कार्यक्रम का संचालन करते हुए गुरुकुल के आचार्य डा. धनंजय जी ने कहा कि गुरुकुल पौंधा की स्थापना सन् 2000 में हुई थी। आरम्भिक तीन चार वर्ष बाद से ही गुरुकुल ने राष्ट्रीय स्तर पर अनेकानेक सफलतायें प्राप्त की हैं। आचार्य जी ने तिरुपति में आयोजित संस्कृत प्रतियोगिता में इसी गुरुकुल के तीन ब्रह्मचारियों द्वारा प्रथम, द्वितीय आदि पारितोषिक प्राप्त करने का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि हमारा यह गुरुकुल पौंधा उत्तराखण्ड का एकमात्र ऐसा गुरुकुल है जो राज्य व राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगिताओं में भाग लेता है और सफलतायें प्राप्त करता है। उन्होंने इसके अनेक उदाहरण भी प्रस्तुत किये। आचार्य जी ने गुरुकल के एक ब्रह्मचारी दीपेन्द्र आर्य का उल्लेख कर बताया कि वह वायु सेना में कार्यरत है, निशानेबाजी में उसने अनेक सफलतायें व पुरस्कार प्राप्त किये है तथा वह दिल्ली में विश्वस्तरीय निशानेबाजी प्रतियोगिता में भी भाग ले राह है जिसमें उसकी सफलता की आशायें हैं। उन्होंने कहा कि यह ब्रह्मचारी भावी ओलम्पिक खेलों में भी भाग ले सकता है जो हमारे गुरुकुल के लिए गौरव होगा। आचार्य धनंजय जी ने कहा कि हमारे गुरुकुल में महर्षि दयानन्द द्वारा निर्धारत आर्ष पद्धति से अध्ययन कराया जाता है। आचार्य जी ने डा. महावीर अग्रवाल जी का उल्लेख कर बताया कि आपके प्रयासों से उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय में स्वामी दयानन्द द्वारा समर्थित व निर्धारित आर्ष पद्धति को मान्यता प्रदान की गई है। आचार्य जी ने बताया कि इस विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में गुरुकुल के विद्यार्थी ब्रह्मचारी नितिन को सफलता मिलने के साथ स्वर्ण पदक भी प्राप्त हुआ है। ब्रह्मचारी रवीन्द्र आर्य इसी गुरुकुल पौंघा की देन हैं जो हरिद्वार के एक महाविद्यालय में सहायक प्रोफेसर हैं और आपने स्वर विज्ञान विषय में पी.एच-डी. अर्थात् विद्यावारिधि की शोध उपाधि प्राप्त की है। गुरुकुल के एक विद्यार्थी का बी.एस.एफ. में निशानेबाजी की प्रवीणता के आधार पर चयन किया गया है। आपने मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित संस्कृत प्रतियोगिताओं की चर्चा कर बताया कि पहले राज्य स्तर पर विद्यार्थियों का चयन होता है। विभिन्न परीक्षाओं के लिए राज्य स्तर पर चुने विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में सम्मिलित किया जाता है। हमारे गुरुकुल के 12 विद्यार्थियों ने इस बार चयन में सफलता प्राप्त कर त्रिपुरा में आयोजित प्रतियोगिता में भाग लिया जिसमें 5 विद्यार्थियों को पदक प्राप्त हुए। अपने गुरुकुल की ऐसी अनेकानेक उपलब्धियां आचार्य धनंजय जी ने श्रोताओं को बताईं और इसके लिए ईश्वर का धन्यवाद किया।

 आचार्य धनंजय जी ने अन्य प्रतियोगिताओं में सफल विद्यार्थियों के नामों का उल्लेख कर कहा कि विद्यार्थियों द्वारा प्रतियोगिताओं में भाग लेना साहसिक कार्य होता है। उन्होंने कहा कि प्रतियोगिता में प्रतिस्पर्धी के रूप में सम्मिलित होना भी स्वयं में एक योग्यता व सफलता होती है। उन्होंने कहा कि संकल्पवान युवक ही प्रतिस्पर्धी बनते हैं।

 आयोजन में गुरुकुल के आचार्य डा. यज्ञवीर जी का सम्बोधन हुआ। डा. यज्ञवीर जी गुरुकुल झज्जर के स्नातक हैं और स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती सहित डा. धर्मवीर जी, डा. रघुवीर वेदालंकार, डा. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई आदि के साथ गुरुकुल झज्जर में परस्पर मित्र रहे। आचार्य जी ने कहा कि ब्रह्मचारी को संकल्पवान् होकर उसको सफल करने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिये और महत्वाकांक्षी बनना चाहिये। उन्होंने कहा कि यदि ब्रह्मचारी प्रतियोगी बनने की कामना ही नहीं करेंगे तो उन्हें सफलता कैसे मिलेगी? सभी ब्रह्मचारियों को प्रेरणा करते हुए उन्होंने कहा कि आगामी प्रतियोेगिताओं में सफलता प्राप्त करने के लिए अभी से जुट जायें। आचार्य जी ने सभी बच्चों की उनके संकल्पों केी सफलता की कामना की।

 आचार्य धनंजय जी ने बताया कि गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी भानु प्रताप आर्य ने अष्टाध्यायी स्मरण कर पिछले वर्ष एक प्रतियोगिता में पदक प्राप्त किया था। ब्रह्मचारी कैलाश का परिचय देते हुए बताया कि यह प्रायः सभी प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं और पुरस्कृत होते वा सफलता प्राप्त करते हैं। ब्रह्मचारी हरिशंकर का परिचय देते हुए उन्होंने बताया कि इन्होंने 22 दिनों में धातु पाठ स्मरण किया है। यह ब्रह्मचारी पुरुषार्थी है, अध्ययनशील है और अपनी योग्यता बढ़ाने के प्रति सजग है। ब्रह्मचारी शिव कुमार का उल्लेख कर बताया गया कि यह सभी प्रतियोगियों की गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को तैयारी कराते हैं। इन पंक्तियों के लेखक भी इस ब्रह्मचारी श्री शिवकुमार जी से व्यक्तिरूप से परिचित हैं। अनेक वेद पारायण यज्ञों में इन्हें मन्त्रपाठ करते देखा व सुना है। बहुत विनम्र एवं दूसरों को सम्मान देने का गुण इनमें है। एक बार गुरुकुल के सहयोगी श्री जगतसिंह आर्य जी के साथ मेरठ में इनकी बहिन के विवाह संस्कार के अवसर पर जाने का अवसर भी हमें मिला है। आज कल यह गुरुकुल कांगड़ी के अन्तर्गत पी.एच-डी. के लिए कार्य कर रहे हैं। इन सूचनाओं के बाद देहरादून के 85 वषीर्य वयोवृद्ध आर्य विद्वान श्री ईश्वर दयालु आर्य, जो फेस बुक पर भी सक्रिय हैं और अच्छी पोस्ट्स पर प्रेरक प्रतिक्रियायें देते हैं, ने अपनी ओर से स्वामी प्रणवाननन्द जी के गुरुकुल संचालन के कार्यों की प्रशंसा की और गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को अपना आशीर्वाद एवं उनकी सफलताओं के लिए शुभकामनायें दीं।

 आर्यसमाज धामावाला देहरादून के वयोवृद्ध आर्य विद्वान एवं स्वाध्यायशील कर्नल श्री रामकुमार आर्य ने अपने सम्बोधन में एन.डी.ए. की परीक्षा में प्रथमवार असफल होने के बाद की अपनी मनोदशा का उल्लेख कर बताया कि एक अज्ञात व्यक्ति ने उन्हें रोते हुए देख कर प्रेरणा की थी कि रोने से सफलता नहीं मिलेगी। उन्होंने प्रेरणा करते हुए कहा था कि और अधिक पुरुषार्थ करने से मेरा काम बनेगा। उन्होंने बताया कि मुझे उनकी बात उचित लगी और अगली बार अधिक पुरुषार्थ कर परीक्षा में सफलता प्राप्त की। कर्नल रामकुमार जी ने जीवन में दृण संकल्प लेने और उसके महत्व पर भी प्रकाश डाला और कहा कि संकल्प के अनुरूप पुरुषार्थ करने पर सफलता अवश्य मिलती है। कर्नल रामकुमार आर्य ने आगे बताया कि वह जाट कालेज, हिसार-हरयाणा में पढ़े हैं जहां प्रतिदिन सन्ध्या और हवन हुआ करता था। उन्हीं संस्कारों से वह आर्यसमाजी बने थे। उन्होंने बताया कि एक बार हम कुछ विद्यार्थियों ने कालेज के सामने अण्डे बेचने वाले एक खोखे के स्वामी को खोखा न हटाने पर अपने पिं्रसीपल श्री ज्ञानचन्द जी की प्रेरणा पर येवा शक्ति का परिचय देते हुए वह कार्य किया कि उसने अपना खोखा वहां से हटा लिया। विद्वान वक्ता ने कहा कि गुरुजन अपने विद्यार्थियों का हित व सफलता चाहते हैं। उन्होंने गुरुकुल के सफल संचालन के लिए आचार्य धनंजय जी को शुभकामनायें दीं। कर्नल रामकुमार आर्य जी ने यह भी बताया कि एक बार उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री श्री निशंक को उत्तराखण्ड की जय प्रथम और भारतमाता की जय बाद में बोलने पर विरोध करते हुए तर्क व युक्तियों से भारतमाता की जय प्रथम और उत्तराखण्ड व अन्य किसी की जय बाद में बोलने का सुझाव दिया था। उन्होंने कहा कि सभी भारतवासियों के लिए भारत माता का स्थान प्रथम स्थान पर हैं और बाकि बातें गौण हैं। इसके बाद मनमोहन आर्य ने भी सम्बोधित किया और कहा कि संसार वेद ज्ञान का प्यासा है और भौतिक उन्नति के व्यामोह में आत्मा की आवश्यकताओं को भूल बैठा है। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का कर्तव्य है कि वह जीवन में जो भी व्यवसाय करें परन्तु उन्हें जीवन में कुछ घण्टे आर्यसमाज के वेद प्रचार कार्य के लिए अवश्य निकालने का संकल्प लेना चाहिये। उन्होंने कहा कि जितना अच्छा प्रचार कार्य गुरुकुल के स्नातक कर सकते हैं उतना अन्य लोग नहीं कर सकते। उन्होंने निःस्वार्थ भाव से आर्यसमाज और वैदिक विचारधारा के प्रचार के लिए प्रयासरत रहने की प्रेरणा की। आचार्य धनंजय जी ने कहा कि हम गुरुकुल से जुड़े आचार्यों व गुरुकुल के स्नातकों को नई पीढ़ी में वेदों की विचारधारा का प्रभावशाली प्रचार करना है।

 गुरुकुल के एक प्रतिभावान् ब्रह्मचारी श्री विजय कुमार आर्य के माता-पिता व परिवार जनों ने मिलकर स्वामी प्रणवानन्द, आचार्य डा. यज्ञवीर, आचार्य डा. धनंजय, आचार्य चन्द्र भूषण शास्त्री और युवा विद्वान ब्रह्मचारी शिवकुमार का वस्त्र आदि भेंट करके सम्मान किया। इसके बाद गुरुकुल के ब्रह्मचारी सुखदेव जी ने भजन सुनाया जिसके कुछ बोल थे **‘तेरी शरण में आया भगवन् दर्शन मुझे अपने दिखा। मन के मेरे भ्रम को मिटा कर अपनी ज्योति दे चमका। तुम ही मेरे जीवन दाता कृपा कर दे जगदाधार, तेरी चाहत की चाहना है, अपना ले या कर दे पराया। तेरी चाहत की चाहना है भगवन अपना ले या करे दे पराया।।’** इसके बाद आचार्य धनंजय जी ने तीन ब्रह्मचारियों ब्र. यशदेव, ब्र. गौरव कुमार एवं ब्र. शिवदेव आर्य का परिचय देकर उनके विशेष गुणों एवं कार्यों पर प्रकाश डाला जो अन्य ब्रह्मचारियों के लिए प्रेरणादायक उदाहरण हैं।

 गुरुकुल के संस्थापक महान ऋषिभक्त यशस्वी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज हम अपने कुछ ब्रह्मचारियों की सफलताओं से प्रसन्न होकर विजय उत्सव मना रहे हैं। उन्होंने कहा कि मकर संक्रान्ति, होली व दीवाली आदि सभी पर्वों की तिथियां निश्चित होती हैं परन्तु यह विजय पर्व विशेष सफलता प्राप्त होने पर ही मनाये जाते हैं। उन्होंने कहा कि आज के पर्व की पहले से कोई तिथि निश्चित नहीं थी। यह तो ब्रह्मचारियों के पुरुषार्थ के बल पर विजय से जुड़ा हुआ उत्सव वा पर्व है। इसके मनाने की काल बद्धता नहीं है। स्वामी जी ने एक वेदमन्त्र का उच्चारण कर कहा कि इस मन्त्र में प्रेरणा है कि उठो, जागो, देखो कि तुमने जो आहुति राष्ट्र व समाज के निर्माण के लिए दी है वह परिपक्व व फलीभूत हुई है या नहीं? स्वामी जी ने कहा कि वेद सन्देश देते हैं कि हे दुनिया के लोगों ! खड़े हो जाओ। समाज के हित के लिए अपने आप को टटोलो और उसके लिए अपने आप को तैयार करो। अपने आप से पूछो कि क्या आप इस कार्य के लिए योग्य बन गये हो। स्वामी जी ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन की प्रेरणाप्रद अनेक घटनाओं पर प्रकाश डाला और उनके द्वारा विद्या के क्षेत्र में योग्यता अर्जित करने की घटनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने अनेक विद्वानों से ज्ञान की प्राप्ति की। निरन्तर 18 वर्ष तक उन्होंने ज्ञान की प्राप्ति व सत्य की खोज की। अन्त में वह दण्डी स्वामी प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी के पास अध्ययन हेतु गये। स्वामी जी ने दयानन्द जी और विरजानन्द जी के आरम्भिक संवादों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने निष्कर्ष रूप में कहा कि स्वामी विरजानन्द जी ने स्वामी दयानन्द जी को जिज्ञासु जानकर विद्यादान देने की स्वामी दयानन्द जी की प्रार्थना को स्वीकार किया था। स्वामी दयानन्द जी ने 3 वर्ष तक उनसे अध्ययन किया। विद्या प्राप्त करने के बाद भी स्वामी दयानन्द अनेक स्थानों पर गये और अपना अध्ययन जारी रखा। सभी मतों के ग्रन्थों को भी पढ़ा। उनके विचारों में परिवर्तन होता रहा। योग में भी उन्होंने उच्च स्थिति को प्राप्त किया। सभी मत, सम्प्रदायों एवं वेदों का ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि संसार में सत्य ज्ञान की पुस्तकें केवल वेद ही हैं। उन्होंने वेद मन्त्र की शिक्षा ‘उठो, जागो और अपने लक्ष्य को प्राप्त करो’ की शिक्षा को जीवन में चरितार्थ किया। उन्होंने जाना कि सब सत्य विद्याओं और इस जगत का आदि मूल परमेश्वर ही है। मनुष्य का धर्म भी वेद की शिक्षाओं का आचरण करना है। स्वामी दयानन्द जी ने निष्कर्ष निकाला कि वेद का पढ़ना व पढ़ाना तथा सुनना व सुनाना सभी मनुष्यों का धर्म नहीं अपितु परम धर्म है। वेदों के न पढ़ने से ही मनुष्य धर्म से दूर होता है और वेदाध्ययन ही मनुष्य को सत्य धर्म से जोड़ता है। उन्होंने धर्म के इन तत्वों को जानकर इनके पालन करने का उदघोष किया। स्वामी जी ने कहा कि मुझे आज यहां गुरुकुल में भाग लेकर अच्छा लग रहा है। हमने भी गुरुकुलों में ही शिक्षा पाई है। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को स्वामी जी ने कहा कि आप हमसे अधिक बुद्धिमान हंै। उन्होंने कहा कि जब हम गुरुकुल झज्जर में पढ़ते थे तो हममे उत्साह होता था। उन्होंने बताया कि गुरुकुल झज्जर में पढ़ते हुए वह 10 वर्षों तक किसी प्रतियोगिता में भाग लेने बाहर नहीं गये। उन्होंने कहा कि हमारे अनेक साथी शास्त्र के विद्वान होने पर भी अनुभव व प्रचार की योग्यता न होने के कारण प्रचार नहीं कर पा रहे हैं। स्वामी जी ने गुरुकुल के ब्रह्मचारी श्री शिवदेव आर्य जी के कार्यों की प्रशंसा की। पाणिनी का एक सूत्र बोलकर उन्होंने कहा कि विद्या तब आयेगी जब हम विद्या के विषयों में परस्पर स्पर्धा को लेकर चलेंगे। विजय उत्सव मनाने के लिए उन्होंने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की प्रशंसा की। पं. प्रकाशवीर शास्त्री के गुणों पर आपने प्रकाश डाला और कहा कि वह वनों में जाकर एकान्त में भाषण का अभ्यास करने से विख्यात वक्ता बने थे। ब्रह्मचारियों को भी उन्होंने पं. प्रकाशवीर जी के जीवन से प्रेरणा लेकर प्रभावशाली वक्ता बनने की प्रेरणा की। उन्होंने कहा कि आप जिस जिस शास्त्र का अध्ययन करेंगे वह शास्त्र आपको अपने रहस्य बताता रहेगा। भाषण, लेखन व ज्ञान मनुष्यों को अध्ययन व अभ्यास से ही आता है अतः सभी को ज्ञानी, अच्छा लेखक व वक्ता बनने का प्रयास करना चाहिये। इस प्रकार योग्यता प्राप्त होने पर ही प्रचार किया जा सकता है।

विजय उत्सव की समाप्ति आचार्य धनंजय जी के धन्यवाद करने व शान्तिपाठ कराने के साथ हुई। कार्यक्रम की समाप्ति के बाद विशेष भोजन का प्रबन्ध था। सभी ने मिलकर भोजन किया। इसके बाद स्वामी प्रणवानन्द जी वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून की नवनिर्मित भव्य यज्ञशाला देखने व स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी से मिलने के लिए प्रस्थान कर गये। आज देहरादून में अत्यधिक ठण्ड थी। रूक रूक कर वर्षा हो रही थी। शिमला व मसूरी में भारी हिमपात भी हुआ है। हमारे आयु एवं ज्ञान वृद्ध मित्र कर्नल श्री रामकुमार आर्य हमें व हमारे परिवार को अपनी कार में गुरुकुल ले गये व घर छोड़ा। उनके इस आर्योचित व्यवहार से हम उनके प्रति नतमस्तक, ऋणी एवं कृतज्ञ हैं। ऐसा ही प्रेम व सद्भाव सभी आर्यों में परस्पर होना चाहिये, ऐसा अनुभव करते हैं।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**